REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

''छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में अंतर का अध्ययन''

डॉ. सरिता पाठक
प्राचार्या, प्रज्ञा शिक्षा महाविद्यालय कटंगी, जबलपुर म. प्र.

सारांश :

प्रस्तुत शोध कार्य में छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में लिंग भिन्नताओं का अध्ययन करना है। प्राथमिक न्यायदर्श में 400 छात्र छात्राओं को लिया गया था। इन पर डॉ0 टी. एन मेहता के स्वसामर्थ्य मापनी प्रशासन कर 60–60 उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य के छात्र छात्राओं को छांटकर इन पर श्री सी. पी. सक्सेना जी को अधिगम व्यवहार मापनी का प्रशासन किया गया। परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि छात्र छात्राओं के अधिगम व्यवहार में, स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में सार्थक भिन्नता नहीं है।

प्रमुख शब्द–स्वसामर्थ्य, अधिगम व्यवहार, लिंग भिन्नता।

प्रस्तावना–

वर्तमान समय में विद्यार्थियों को बहुत अधिक प्रतिस्पर्धाओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि उनके विभिन्न मनोवैज्ञानिक विशेषताएं पूर्ण रूप से विकसित क्षेत्र जिससे वे उनके माध्यम से किसी भी प्रतियोगिता में सम्मिलित होकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके। यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे विभिन्न परिस्थितियों में अपने कार्य निष्पादन में अपनी योग्यता के अनुरूप अधिकतम सम्भावित उपलब्धि को प्राप्त कर सके। इसमें उनके स्वसामर्थ्य की विशिष्ठ भूमिका हो जाती है। इसके साथ ही साथ विद्यार्थियों के जीवन में शैक्षिक उपलब्धि का विशिष्ठ महत्व होता है। शैक्षिक उपलब्धि के लिए बौद्धिक योग्यता के साथ–साथ उनमें अधिगम के प्रति सकारात्मक रूख होना आवश्यक है। अप्रत्यक्ष रूप से इसे उनके अधिगम व्यवहार के रूप में लिया जा सकता है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के होने के कारण जहाँ एक ओर स्वसामर्थ्य में अन्तर होता है। छात्र एवं छात्राओं में कुछ नैसर्गिक गुणों में अन्तर होता है जिससे उनके व्यवहार में अन्तर परिलक्षित होता है।स्वसामर्थ्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता को कहते हैं जिसके माध्यम से वह किसी विशेष परिस्थितियों में किसी विशेष कार्य को, विशेष तरीके से अपनी सामर्थ्य को आंकलित कर निष्पादित करता है। उचित प्रकार की स्वसामर्थ्य द्वारा शारीरिक एवं शैक्षणिक दोनों ही कार्यों की निष्पादनता को बढ़ाया जा सकता है। **बैड़ ब्यौरा (1988)** ने बताया कि शारीरिक क्षमता से संबंधित उच्च स्तरीय स्वसामर्थ्य द्वारा व्यायाम कार्य में व्यक्ति सफलता एवं व्यवहार पर स्वनियंत्रण जैसे गुण प्राप्त किये जा सकते हैं। असमर्थता उसकी बेहतर स्वसामर्थ्य में कमी को दर्शाता है। यदि व्यक्ति में स्वसामर्थ्य कूट–कूट कर भरी हो तो उसमें उच्च स्तर की संकल्प क्षमता होगी और वह सफलता के शिखर पर आसीन होगा। अतः स्वसामर्थ्य में उसकी स्वयं की उच्च स्तरीय संकल्प शक्ति एवं सफलता के शिखर की प्राप्ति हेतु निष्पादन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता समाहित होती है। इस क्षमता का एक कारण यह है कि उक्त शारीरिक कार्य हेतु उच्च स्वसामर्थ्य का अनुभव शरीर को

''इंडोजिनस ओपिडस'' उत्पन्न करने हेतु प्रेरित करता है जो नैसर्गिक एवं निवारण के रूप में कार्य करता है, जिससे वह व्यक्ति शारीरिक कार्य को लगातार करने में सक्षम हो पाता है। **(गोल्डन एवं वेक्स –1981)**

अधिगम व्यवहार सीखने वाले के सीखने के तरीके को प्रभावित करता है। अधिगम व्यवहार सीखने वाले की संसाधनपूर्णता, रचनात्मक सोच, कल्पनाशीलता और ध्यान को लगातार बनाये रखने को परिलक्षित करता है। अध्ययनों से पता चलता है कि अधिगम व्यवहार, अधिगम को एक सतत् प्रक्रिया बनाता है और अच्छे परिणाम सामने आते हैं। **सैडनिल (1944)**ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन बच्चों को घर व विद्यालय में सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होती है, उनमें अधिगम का बेहतर व्यवहार पाया जाता है। **ओजेमन एवं विल्किन्सन (1949)** ने यह पाया कि जिन बच्चों में अपने विद्यालय, शिक्षक तथा कार्यों के प्रति सकारात्मक सोच होती है, उनमें अधिगम व्यवहार का उचित विकास होता है। **सुशमा कुशराम, अर्चना दवे एवं बी निगम (2008)**ने प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पाया कि उच्चतम विद्यालयीन वातावरण वाले छात्रों का अधिगम व्यवहार छात्राओं के अधिगम व्यवहार की अपेक्षाकृत अच्छा था। सामान्य विद्यालयीन वातावरण वाले छात्र और छात्राओं के अधिगम व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया।

प्रस्तुत शोध में यह देखने का प्रयास किया गया है कि क्या छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर होता है? शोध निष्कर्षोंमें यदि लिंग भिन्नतायें पायी जाती हैं तो छात्र एवं छात्राओं को परामर्श दिया जा सकेगा कि किस तरह वे अपने अधिगम व्यवहार में विकास कर सकते हैं जिससे किवे अधिकतम संभाव्य उपलब्धि को प्राप्त करके अपने आत्मविश्वास में होने वाली गलाकाट प्रतिस्पर्धामें वे भली प्रकार अपना निष्पादन करके सफलता अर्जित कर सकें।

उद्देश्यः–छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में अंतर का अध्ययन।

परिकल्पनाः– छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्यमें कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

स्वतंत्र चरः– 1. स्वसामर्थ्य 2. छात्र या छात्रा होना (लिंग)

आश्रित चरः–अधिगम व्यवहार

नियंत्रित चरः–नवीं कक्षा, आयु– 14–16 वर्ष

न्यादर्शः–प्रस्तुत शोध में छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में स्वसामर्थ्य के परिप्रेक्ष्य में अंतर को देखना है जिसके अध्ययन के लिए निम्नलिखित न्यादर्श लिया गया है :–

तलिका क्रमांक–व
प्राथमिक न्यादर्श

समूह	संख्या
छात्र	400
छात्रा	400
कुल	800

न्यादर्श में कक्षा नवीं के छात्र–छात्राएँलिए गए हैं जिनकी आयु सीमा 14–16 वर्ष हैं।

उपरोक्त न्यादर्श में छात्र एवं छात्राओं पर डॉ0 टी मेहता द्वारा निर्मित स्वसामर्थ्य मापनी का प्रभासन किया गया। मापनी का फलांकन निर्देश पुस्तिका में दिये निर्देशों के अनुसार किया गया।

तालिका क्रमांक – 02
स्वसामर्थ्य के आधार पर न्यादर्श

स्वःसामर्थ्य	छात्र	छात्रा	योग
उच्च	60	60	120
निम्न	60	60	120

(1) उपकरण–स्वसामर्थ्य मापनी–डॉ0 टी. मेहता
(2) अधिगम व्यवहार मापनी– सी.पी. सक्सेना

विधि–प्रस्तुत शोध में समस्या के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों पर स्वसामर्थ्य मापनी का प्रशासन किया गया। फलांकन के पश्चात प्राप्त अंकों को निर्देश पुस्तिका में दिये गये वर्गीकरण के आधार पर उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया। इन चयनित स्वसामर्थ्य वाले विद्यार्थियों पर अधिगम व्यवहार मापनी का प्रशासन कर फलांकन किया गया।

परिणामों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात की गणना की गई।

परिणामों की व्याख्या–

परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार है–

तालिका क्रमांक– 03
उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार के तुलनात्मक परिणाम।

स्वसामर्थ्य	समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	क्रांतिक उपाय	पी–मान
उच्च	छात्रा	60	28.80	6.80	1.83	0.05
उच्च	छात्रा	60	26.90	4.30		
निम्न	छात्र	60	26.70	6.20	0.09	0.05
निम्न	छात्रा	60	26.80	5.30		

स्वतंत्रता के अंश –118

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु सारणी मान–2.000
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु सारणी मान–2.66

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि उच्च स्वसामर्थ्य के छात्रों का मध्यमान 28.80 एवं छात्राओं का मध्यमान 26.90 है। इसके मध्य साँख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.83 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु न्यूनतम सारणीमान 1.98 से कम है।उपरोक्त परिणामों से प्रदर्शित होता है कि उच्च स्वसामर्थ्य समूह के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है निम्न स्वसामर्थ्य के छात्रों का मध्यमान 26.70 एवं छात्राओं का मध्यमान 26.80 है। इनके मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रॉतिक अनुपात का मान 0.09 आया है जो 0.05 स्तर पर न्यूनतम सारणी मान 1.98 से कम है। अतः निम्न स्वसामर्थ्य समूह के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में भी कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य समुह के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है। वर्तमान समय में छात्र एवं छात्रा, दोनों ही, अपने अधिकतम संभाव्य योग्यता का प्रयोग उच्च शैक्षणिक उपलब्धि एवं अकादमिक योग्यता के विकास हेतु करते हैं। छात्राओं के अभिभावक भी उन्हें छात्रों के समान ही सभी सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं एवं उन्हें उच्च उपलब्धि हेतु प्रोत्साहित करते रहते हैं। इसके फलस्वरूप उनके अधिगम व्यवहार का निरन्तर विकास होते रहता है। स्वसामर्थ्य स्वाभाविक रूप से अधिगम व्यवहार को प्रभावित करता है परन्तु वर्तमान समय में छात्र एवं छात्राओं के भावनात्मक नियन्त्रण की योग्यता अधिक हो जाने के कारण उनके अधिगम व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं हो पाता है। छात्र एवं छात्राओं दोनों में ही आत्मचेतना जागृत होती है एवं इनके स्व का विकास होता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि वर्तमान समय में छात्र एवं छात्रायें दोनों ही अपनी योग्यता एवं क्षमताओं का अधिकतम संभाव्य उपयोग कर रहे हैं जिससे वर्तमान प्रतियोगिता के युग में न केवल आपस में प्रतियोगिता करते हैं वरन् मैरिट में आने के लिए अधिकतम प्रयास करते हैं। ऐसे में

उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य समूहों के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में लिंग भिन्नता न होना स्वाभाविक प्रतीत होता है।

उच्च स्वसामर्थ्य वाले छात्र एवं छात्राओं में सकारात्मक स्वमूल्यांकन के साथ–साथ परिस्थितियों के वास्तविक आकलन की क्षमता होती है इसके साथ ही उपलब्धियों की वास्तविक स्वीकार्यता की भावना होती है। इसके फलस्वरूप इनमें भावनात्मक नियंत्रण अच्छा होता है। इनके क्रिया–कलाप लक्ष्य प्राप्ति हेतु कटिबद्व होते हैं। उच्च स्वसामर्थ्य छात्र एवं छात्राएं दोनों में ये गुण होते हैं। इसी प्रकार निम्न स्वसामर्थ्य के छात्र–छात्राओं में इस प्रकार की भावनायें न्यून मात्रा में होती है। इनमें जहां एक ओर आत्मसंतोष एवं आत्मविश्वास संबंधी गंभीर भावनाओं की कमी होती है वहीं दूसरी ओर स्वयं को असमर्थ मानने एवं पुरस्कार के योग्य न समझने की भावना हो जाती है जिससे वे स्वयं निर्णय न लेकर दूसरों के निर्णय एवं विचारों को स्वीकार कर लेते हैं। इस प्रकार उच्च एवं निम्न स्वसामर्थ्य के छात्र एवं छात्राओं दोनों में ये गुण समान मात्रा में होते हैं अर्थात् इनमें लिंग भिन्नता नहीं होती है। यह भी सर्वमान्य है कि अधिगम व्यवहार, अधिगम को एक सतत् प्रक्रिया बनाता है एवं उच्च एवं निम्न दोनों प्रकार के स्वसामर्थ्य के छात्र एवं छात्राओं के ये गुण समान मात्रा में होने के कारण इनमें सार्थक अंतर नहीं होता है। इस संबंध में **सैडनिल (1944)** का अध्ययन महत्वपूर्ण है जिसमें उन्होंने पाया था कि जिन बच्चों को घर व विद्यालय में सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त होती है उनमें अधिगम का अच्छा व्यवहार पाया जाता है। प्रस्तुत शोध कार्य में छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में लिंग भिन्नता न होना उपरोक्त शोध निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं क्योंकि उच्च एवं निम्न दोनों प्रकार के स्वसामर्थ्य के छात्र छात्राओं में समान रूप से स्वीकार्यता मिली है जिससे उनके अधिगम व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है।उच्च एवं निम्न दोनों स्तर के स्वसामर्थ्य के छात्र एवं छात्राओं में अपने विद्यालय के शिक्षकों तथा कार्यों के प्रति समान प्रकार की सोच होती है जिससे उनके अधिगम व्यवहार में समान रूप से परिवर्तन होते हैं या समान रूप से विकास होता है। **(ओजेमन एवं विल्किन्सन 1949)।** प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम भी इन्हीं परिणामों के अनुरूप हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समय का पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण छात्र एवं छात्राओं के समान रूप से विकसित होने में एक साथ योगदान दे रहे हैं जिससे अधिगम व्यवहार में सार्थक अंतर नहीं है जो उन्हें समान उपलब्धि के लिए प्रेरित करता है। उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गयी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष– उच्च/निम्न स्वसामर्थ्य के छात्र एवं छात्राओं के अधिगम व्यवहार में सार्थक लिंग भिन्नता नहीं होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.अटल योगेश (1965) ''आदिवासी भारत,'' दिल्ली,राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण।
2.अर्चना दबे (2010): ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संज्ञानात्मक योग्यता एवं अधिगम व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन'' अप्रकाशित पी. एच. डी. शोध प्रबन्ध, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
3. बुच.एम.बी. (1972–78): सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' वाल्यूम–2
4. बुच.एम.बी. (1974): ''सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' वाल्यूम– 1 } प्रकाशन NCERT दिल्ली
5. बुच.एम.बी. (1978–83):सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन''वाल्यूम–3
6.माथुर, डॉ0 एच.एस. (1980–81): ''समाज मनोविज्ञान,'' आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,आठवाँ संस्करण
7.भार्गव उषा (1993) ''किशोर मनोविज्ञान,'' मेरठ, नवीन संस्करण, इगल बुक्स इंटरनेशनल, मेरठ, पृष्ठ क्रमांकः 191–192

डॉ. सरिता पाठक
प्राचार्या, प्रज्ञा शिक्षा महाविद्यालय कटंगी, जबलपुर म. प्र.